



सल्तनत काल के दौरान छोटे राज्य : एक विवेचना

Bijender Singh, bijender420@gmail.com

सार : भारत के मध्यकालीन इतिहास का दौर 8 वीं सदी से लेकर 15 वीं सदी

तक माना जाता है | इस काल में हम पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट से लेकर

शक्तिशाली दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य के बारे में विस्तार से अध्ययन

करेंगे | इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि यह अध्ययन सामग्री न सिर्फ

प्रतियोगी छात्रों के लिए बल्कि स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों और ग्रेजुएशन कर रहे विद्यार्थियों के लिए भी

लाभदायक सिद्ध होगी |

वर्तमान भारत के विकास में इसके मध्यकालीन इतिहास का बहुत बड़ा योगदान है | इस दौर में भारत ने भवन

निर्माण कला, चित्रकला, धर्म, भाषा और साहित्य के क्षेत्र में बहुत विकास किया था | इसलिए इन्हीं क्षेत्रों के

आधार पर सम्पूर्ण मध्यकालीन इतिहास को 5 मुख्य भागों, पाल प्रतिहार राष्ट्रकूट, राजपूत, धार्मिक आन्दोलन,

दिल्ली सल्तनत और मुगल काल में बांटा है |

राज्य में नियम और विनियम नहीं था, कोई भी अपने आप को शासक घोषित कर सकता था। वंश और

राजशाही का अधिक औचित्य नहीं था। रईसों ने राजा निर्माता का स्थान ग्रहण कर रखा था और कमजोर

सुल्तानों को अपने नियंत्रण में रख कर गद्दी/ सिंहासन पर अपनी पकड़ को बनाए रखा था | वह राज्य जो एक

बार अपने न्यायिक और प्रशासनिक गौरव के लिए जाना जाता था अब वह अराजकता और अशांति के अधीन

ISSN : 2348-5612 © URR



9 770234 856124



था जो विघटन का मुख्य कारण था। इसने अनेक छोटे कमजोर राज्यों को भी जन्म दिया जो सल्तनत के शासकों के खिलाफ खड़े हुये, जो प्रत्यक्ष तौर पर देश में विस्तार का कारण रहा।

दिल्ली सल्तनत काल :

जौनपुर (1401 ईस्वी): इसका उदय मलिक-उश-शर्क के शासन में हुआ, तैमूर के हमले के बाद शर्क ने इस भ्रम का फायदा उठाया और अपने सत्तारूढ़ शक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। उसके उत्तराधिकारी इतिहास में शरीकी के रूप में जाने जाते थे। हुसैन शाह शरीकी वंश का आखिरी शासक था।

मालवा (1435 ईस्वी): इस प्रांत को 1305 ईस्वी में अलाउद्दीन खिल्जी के सल्तनत के अधीन कर लिया गया। यह अपने राज्यपाल दिहावन खान घूरी (जो एक कमजोर और फीका शासक के रूप में जाना जाता था) तक मजबूत और एकीकृत रहा, और 1435 ईस्वी में अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी थी। इस विशाल राज्य का विस्तार सतपुड़ा से गुजरात की सीमाओं और बुंदेलखंड के क्षेत्र से मेवाड़ और बूंदी तक हुआ।

मालवा वर्ष 1531 ईस्वी में गुजरात का एक एकीकृत अंग बन गया और अंत में 1562 ईस्वी में मुगलों द्वारा हड़प लिया गया।

गुजरात (1397 ईस्वी) : 1397 ईस्वी में मुजफ्फरी राजवंश ने गुजरात का पदभार संभाल लिया जो जफर खान के शासन के अधीन था। मुजफ्फर शाह ने इस सत्तारूढ़ शक्ति के खिलाफ विद्रोह कर दिया और मुजफ्फरी राजवंश की स्थापना की।



उसने जबरदस्ती सुल्तान मुजफ्फर शाह की उपाधि लिया। उसके अधीन इस वंश ने 1573 ईस्वी तक राज्यों पर नियंत्रण किया। उसके राज्य काल के दौरान उसने निज़ाम शाह बहमनी को नागरिक आक्रामकता से बचाया। बाद में वह पुर्तगाली सेना के द्वारा मारा गया, और 1573 ईस्वी में अकबर ने गुजरात को अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया।

राजस्थान:

इस काल के दौरान राजस्थान में 3 प्रमुख स्वतंत्र राज्य थे:

1. मेवाड़ (1303 ईस्वी)

- 1303 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा चित्तौड़ की राजधानी पर कब्जा कर इसे जब्त किया गया था। बाद में उग्र राजपूत राजाओं ने खिलजी को अपने कब्जे में ले लिया था।
- बहादुर राजपूत शासक राणा हामिद ने जल्द ही 1326 ईस्वी में खिलजी के चंगुल से मेवाड़ को छुड़ा लिया था।
- उसे मेवाड़ पर विजय के उपलक्ष्य में चित्तौड़ में प्रसिद्ध 'विजय स्तंभ' का निर्माण करने के लिए जाना जाता है।
- छोटी सेना होने की वजह से वह खनुवा में 1527 ईस्वी में बाबर से हार गए थे।
- 1615 ईस्वी में मेवाड़ ने जहांगीर के आधिपत्य को स्वीकार कर लिया था।

2. आमेर (या अंबर) (1561 ईस्वी)

- कछुवाह राजपूत जो महान योद्धा और निर्माणकर्ता थे, ने दशवी शताब्दी में किलों के शहर की स्थापना किया।



- इस तथ्य के अलावा कि अंबर एक राजपूत राज्य था मुगल आधिपत्य को स्वीकार करने वाला यह पहला राज्य था।
- यह एक हकीकत है कि आमेर के शासक भारमल ने अकबर के प्रभुत्व को 1561 में मान्यता प्रदान की और मुगल साम्राज्य के गरिमा और विस्तार में अत्यधिक योगदान दिया।

कश्मीर (1339 ईस्वी)

कश्मीर के प्रथम मुस्लिम सुल्तान, शाह मिर्जा को शम्स-उद-दिन शाह के नाम से भी जाना जाता था जिसका सिंहासन 1339 ईस्वी में जब्त कर लिया गया था। मिर्जा को हिंदुओं का उत्पीड़न करने के लिए जाना जाता था जिसके कारण हिंदुओं के हितों की रक्षा के लिए उसे उसके भाई शाह खान के द्वारा अपदस्थ कर दिया गया। सिकंदर को जैन-उल-अबिदीन की उपाधि से नवाजा गया क्योंकि वह एक योग्य शासक था।

जैन-उल-अबिदीन को “कश्मीर का अकबर” के नाम से भी जाना था। उसने उन ब्राह्मणों को वापस बुलाया जो मिर्जा के विश्वासघात की वजह से कश्मीर छोड़ कर भाग गए थे। उसने महाभारत और राजतरंगिणी का फारसी भाषा में अनुवाद भी करवाया। कश्मीर के राज्य को अकबर ने 1586 में हड़प लिया था।

बंगाल:

इख्तियार-उद-दिन मुहम्मद-बिन-बख्तियार खल्जी ने 1204 ईस्वी में बंगाल को दिल्ली सल्तनत का एक भाग बनाया। लेकिन राजधानी से दूर होने की वजह से दिल्ली से बंगाल पर शासन करने में हमेशा कठिनाईया उत्पन्न होती थीं।



यह ग्याश-उद-दिन तुगलक के शासन के अधीन था, बंगाल तीन स्वतंत्र प्रशासनिक प्रभाग में विभाजित किया

गया था जिनके नाम क्रमशः लखनौती, सतगांव और सोनारगांव थे।

बंगाल 1410 ईस्वी तक सैफ-उद-दिन हमज़ा शाह के शासन के अधीन था। बाद में हमज़ा, ग्याश-उद-दिन ने

अपने आप को एक स्वतंत्र शासक के रूप में स्थापित किया।

ग्याश-उद-दिन मुहम्मद शाह वंश का आखिरी राजा था। 1538 ईस्वी में बंगाल के प्रांत पर शेर शाह सूरी ने

कब्जा कर लिया था।

उड़ीसा (1706)

1076 ईस्वी से 1148 ईस्वी तक राजा अनंतवर्मन के अधीन उड़ीसा राज्य ने अपने पूर्ण गौरव और प्रख्याति को

देखा। अनंतवर्मन कला और साहित्य के महान संरक्षक थे। वह एक महान विजेता थे जिसे पुरी में प्रसिद्ध

जगन्नाथ मंदिर के जीत के रूप में देखा जाता है। उन्हें कुछ योग्य शासकों के द्वारा सफल बनाया गया जब तक

कि फिरोज शाह तुगलक ने राज्य पर आक्रमण और पुरी में जगन्नाथ मंदिर को अपवित्र नहीं किया था।

कामरूप और असम (1305 ईस्वी)

तेरहवीं शताब्दी तक कामरूप के राज्य का इतिहास स्पष्ट नहीं है। अहोम ने ब्रह्मपुत्र घाटी में उत्तरी बर्मा से

प्रवेश किया और तेरहवीं सदी के पहले भाग में अपने पूर्वी क्षेत्र में एक राज्य की स्थापना की। इतिहास में इस

वंश के संस्थापक सुकाफा थे। सत्रहवीं शताब्दी में अहोम राज्य मुगल आक्रमणों का निशाना बने।

खानदेश (1388 ईस्वी)



1388 ईस्वी मे राजधानी बुरहानपुर मे राजा मलिक के योग्य शासन मे, ताप्ती की घाटी मे खानदेश के छोटे राज्य स्वतंत्र हुये। इसके शासक फरुक्की वंश के नाम से जाने गए। उनकी मृत्यु के पश्चात दो राज्य फिर से अलग संस्थाएं बन गए। 1601 ईस्वी मे राज्य पर अकबर ने कब्जा कर था।

सन्दर्भ सूचि :

1. Hovel, E.B Indian Architecture Through the Ages
2. Jackson, Peter The Delhi Sultanate
3. Karashima, N. Towards a New Formation : South Indian Society under
4. Vijayanagar
5. Koch, Ebb Mughal Architecture : An Outline of its History and
6. Development 1528-1858
7. Koch, Ebb Mughal Art and Imperial Ideology
8. Nigam, S.B.P. Nobility under the Sultans of Delhi
9. Nizami, K.A. Religion and Politics in the 13th Century India
10. Qaisar, A.J. Indian Response to European Technology and Culture
11. Rashid, A. Society and Culture in Medieval India